इकाई – 1 पुस्तकालय प्रबंधन सॉफ्टवेयर और डिजिटल पुस्तकालय सिस्टम का परिचय

इकाई की संरचना

1-1 प्रस्तावना

1-2 उद्देश्य

1-3 पुस्तकालय प्रबंधन सॉफ्टवेयर (LMS) परिभाषा

1-3:1 पुस्तकालय मैनेजमेंट सॉफ्टवेयर (LMS) की विशेषताएं

1-3:2 एलएमएस (LMS) के उपयोग के लाभ

1-3:3 एलएमएस (LMS) के उपयोग में चुनौतियाँ

1-4 डिजिटल पुस्तकालय सिस्टम (DLS) परिभाषा

1-4:1 डिजिटल पुस्तकालय सिस्टम (DLS) की विशेषताएं

1-4:2 डिजिटल पुस्तकालय सिस्टम (DLS) में चुनौतियाँ

1-5 अभ्यास प्रश्न

1-6 सारांश

1-7 शब्दावली

1-8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1-9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1-10 निबंधात्मक प्रश्न

1-1 प्रस्तावना

आज की सूचना-आधारित दुनिया में, पुस्तकालय के विशाल संसाधनों का प्रभावी रूप से प्रबंधन करना पुस्तकालयाध्यक्ष और पुस्तकालय स्टाफ के लिए एक आवश्यक कार्य बन गया है। पारंपरिक रूप से, पुस्तकालय भौतिक श्रेणीकरण और मैन्युअल ट्रैकिंग प्रणालियों पर निर्भर थीं, लेकिन प्रौद्योगिकी में प्रगति के साथ, पुस्तकालय प्रबंधन सॉफ़्टवेयर (LMS) और डिजिटल पुस्तकालय सिस्टम (DLS) ने पुस्तकालयों के संचालन के तरीके में क्रांति ला दी है। ये प्रणालियाँ नियमित कार्यों को स्वचालित करती हैं, संसाधन प्रबंधन को सरल बनाती हैं, पहुंच को बढ़ाती हैं, और उपयोगकर्ता अनुभव को सुधारती हैं। पुस्तकालय मैनेजमेंट सॉफ्टवेयर (LMS) पुस्तकालय के विभिन्न कार्यों जैसे कैटलॉगिंग, पुस्तकों की जाँच करना और उन्हें वापस करना, इन्वेंट्री को ट्रैक करना और उपयोगकर्ता खातों का प्रबंधन करना स्वचालित करता है। LMS पुस्तकालयाध्यक्ष को संसाधनों का कुशलतापूर्वक प्रबंधन करने, मैन्युअल त्रुटियों को कम करने और उपयोगकर्ताओं को पुस्तकालय सामग्री तक त्वरित पहुँच प्रदान करने की अनुमति देता है। सॉफ़्टवेयर अक्सर ऑनलाइन कैटलॉग, खोज कार्यक्षमता

और रिपोर्टिंग टूल जैसी सुविधाओं को एकीकृत करता है, जो उपयोगकर्ता और प्रशासनिक अनुभव दोनों को बढ़ाता है।

दूसरी ओर, एक डिजिटल पुस्तकालय सिस्टम (DLS) एक इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम को संदर्भित करता है जो ई-बुक, जर्नल और मल्टीमीडिया सामग्री जैसे डिजिटल संसाधनों को संग्रहीत, व्यवस्थित और पहुँच प्रदान करता है। DLS सूचना तक दूरस्थ पहुँच को सक्षम करके, मल्टीमीडिया प्रारूपों का समर्थन करके और डिजिटल अभिलेखागार के माध्यम से सहयोग को बढ़ावा देकर पारंपरिक पुस्तकालय प्रबंधन से आगे निकल जाता है। यह ज्ञान साझा करने की सुविधा प्रदान करता है और डिजिटल संपत्तियों के दीर्घकालिक संरक्षण को सुनिश्चित करता है।

LMS और DLS दोनों ही पुस्तकालय सिस्टम की विकसित प्रकृति का प्रतिनिधित्व करते हैं, जहाँ सूचना की पहुँच, प्रबंधन और प्रसार को बढ़ाने में तकनीक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ये प्रणालियाँ न केवल परिचालन दक्षता में सुधार करती हैं, बल्कि विश्व भर के उपयोगकर्ताओं के लिए अधिक आकर्षक और सुलभ पुस्तकालय वातावरण भी बनाती हैं।

1-2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पश्चात आप –

पुस्तकालय मैनेजमेंट सॉफ़्टवेयर (LMS) और डिजिटल पुस्तकालय सिस्टम (DLS) के उद्देश्य एक कुशल और व्यवस्थित लाइब्रेरी संचालन के लिए महत्वपूर्ण हैं। LMS का मुख्य उद्देश्य पुस्तक और अन्य संसाधनों का प्रभावी प्रबंधन करना है, जिससे उपयोगकर्ता आसानी से सामग्री का पता लगा सकें और उसे पुनः प्राप्त कर सकें। इसके अतिरिक्त, यह लेन-देन प्रबंधन, रिपोर्टिंग, विश्लेषण और इन्वेंट्री प्रबंधन में मदद करता है। इसके साथ ही, एक्सेस कंट्रोल और बाहरी प्रणालियों के साथ एकीकरण भी LMS का हिस्सा हैं, ताकि डेटा की सुरक्षा और आसान पहुँच सुनिश्चित हो सके।

डिजिटल लाइब्रेरी सिस्टम का उद्देश्य डिजिटल सामग्री तक पहुँच को सुविधाजनक बनाना है, जिससे शोधकर्ताओं और छात्रों को सामग्री का संरक्षण, संग्रहण और बेहतर खोज सुविधा मिल सके। यह प्रणाली दूरस्थ पहुँच, सहयोग और साझा करने की सुविधा प्रदान करती है। इसके अलावा, यह अंतर-संचालन की सुविधा प्रदान करती है, जिससे विभिन्न प्लेटफ़ॉर्मों पर सामग्री का आदान-प्रदान किया जा सकता है। सामग्री सुरक्षा और कॉपीराइट प्रबंधन, उपयोगकर्ता अनुभव और मेटाडेटा प्रबंधन भी इस प्रणाली के महत्वपूर्ण पहलू हैं।

1-3 पुस्तकालय मैनेजमेंट सॉफ्टवेयर (LMS) परिभाषा

पुस्तकालय मैनेजमेंट सॉफ्टवेयर (LMS) एक डिजिटल समाधान है जिसे पुस्तकालय के दैनिक कार्यों को स्वचालित और सुव्यवस्थित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह संसाधनों के प्रबंधन, वस्तुओं को ट्रैक करने और पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं को अधिक कुशलता से सेवा प्रदान करने में मदद करता है।

1-3:1 पुस्तकालय मैनेजमेंट सॉफ्टवेयर (LMS) की विशेषताएं

कैटलॉग प्रबंधन:

पुस्तकों, पत्रिकाओं, ई-पुस्तकों और अन्य संसाधनों को व्यवस्थित और प्रबंधित कर सकते है। उपयोगकर्ता शीर्षक, लेखक, प्रकाशक या ISBN के आधार पर खोज सकते हैं।

उपयोगकर्ता प्रबंधन:

छात्र, कर्मचारी या आगंतुक विवरण सहित पुस्तकालय सदस्यों के लिए प्रोफ़ाइल बनाना और उनके उधार इतिहास को ट्रैक कर सकते हैं।

पुस्तक चेक-इन/चेक-आउट:

उपयोगकर्ताओं को बारकोड स्कैनिंग या मैन्युअल प्रविष्टि के साथ आइटम उधार लेने और वापस करने की अनुमति देता है, और देय तिथियों का ट्रैक रखता है।

आरक्षण और होल्ड प्रबंधन:

उपयोगकर्ता चेक-आउट की गई पुस्तकों के लिए आरक्षण कर सकते हैं, और जब आइटम उपलब्ध होते हैं तो सिस्टम उन्हें सूचित करता है।

इन्वेंट्री प्रबंधन:

इससे हम स्टॉक में आइटम की संख्या को ट्रैक, अधिग्रहण का प्रबंधन करते है, और आइटम की स्थिति या क्षति रिपोर्ट को संभालते है।

जुर्माना और शुल्क:

देरी से रिटर्न और किसी भी अन्य संबंधित शुल्क के लिए स्वचालित रूप से अतिदेय जुर्माना की गणना और ट्रैक करते है।

रिपोर्ट और विश्लेषण:

निर्णय लेने के लिए पुस्तकालय उपयोग, लोकप्रिय पुस्तकों, अतिदेय आइटम और वित्तीय डेटा पर रिपोर्ट तैयार करते है।

खोज कार्यक्षमता:

उन्नत खोज विकल्प उपयोगकर्ताओं को कीवर्ड, लेखक, विषय और अन्य सहित विभिन्न मानदंडों के आधार पर संसाधन खोजने की अनुमति देते हैं।

डिजिटल संसाधन प्रबंधन:

ऑनलाइन पहुँच के लिए ई-पुस्तकें, पत्रिकाएँ और ऑडियोबुक जैसे डिजिटल संसाधनों का प्रबंधन करते हैं।

स्वचालन:

समय बचाने और मैन्युअल त्रुटियों को कम करने के लिए अतिदेय नोटिस, नवीनीकरण के लिए अनुस्मारक और रिपोर्ट भेजने जैसे नियमित कार्यों को स्वचालित करता है।

1-3:2 एलएमएस (LMS) के उपयोग के लाभ

पुस्तकालय संचालन में दक्षता:

मैन्युअल कार्यों को स्वचालित करता है, जिससे त्रुटियाँ और कार्यभार कम होता है।

लागत-प्रभावशीलता:

श्रम लागत और परिचालन अक्षमताओं को कम करता है।

संसाधन प्रबंधन में सुधार:

भौतिक और डिजिटल संग्रहों की बेहतर ट्रैकिंग और प्रबंधन प्रदान करता है।

1-3:3 एलएमएस (LMS) के उपयोग में चुनौतियाँ

डेटा सुरक्षा और गोपनीयता:

व्यक्तिगत डेटा और पुस्तकालय सामग्री की सुरक्षा सुनिश्चित करना एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है।

लागत:

वाणिज्यिक एलएमएस महंगा हो सकता है, और इसके लिए निरंतर रखरखाव और लाइसेंसिंग शुल्क देना पड़ता है।

प्रशिक्षण:

पुस्तकालय कर्मचारियों को नई प्रणाली पर प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है, जो समय लेने वाली हो सकती है।

1-4 डिजिटल पुस्तकालय सिस्टम (DLS) परिभाषा

डिजिटल पुस्तकालय सिस्टम (डीएलएस) एक सॉफ्टवेयर सिस्टम है जो डिजिटल वस्तुओं और संग्रहों के निर्माण, प्रबंधन, भंडारण और संरक्षण की अनुमति देता है, जिससे उपयोगकर्ताओं को इलेक्ट्रॉनिक प्रारूपों में जानकारी तक पहुंच मिलती है।

1-4:1 डिजिटल पुस्तकालय सिस्टम (DLS) की विशेषताएं

दूरस्थ पहुँच:

उपयोगकर्ता इंटरनेट कनेक्शन के साथ किसी भी स्थान से संसाधनों तक पहुँच सकते हैं, जिससे लचीलापन बढ़ता है।

एकाधिक पहुँच:

कई उपयोगकर्ता एक ही समय में समान संसाधनों तक पहुँच सकते हैं, जिससे दक्षता बढ़ती है।

उपयोगकर्ता-अनुकूल इंटरफ़ेस:

डिजिटल पुस्तकालयों में अक्सर आसान नेविगेशन और सूचना पुनर्प्राप्ति के लिए सहज ज्ञान युक्त इंटरफ़ेस होते हैं।

कोई भौतिक सीमा नहीं:

डिजिटल पुस्तकालय भौतिक स्थान की आवश्यकता को समाप्त करते हैं, जिससे कहीं से भी पहुँच संभव होती है।

संसाधनों की विस्तृत श्रृंखला:

डिजिटल पुस्तकालय ई-पुस्तकें, ऑडियोबुक, वीडियो, शोध पत्र और बहुत कुछ सहित डिजिटल सामग्रियों का एक विशाल संग्रह प्रदान करते हैं।

उन्नत खोज और पुनर्प्राप्ति:

शक्तिशाली खोज उपकरण उपयोगकर्ताओं को विशिष्ट जानकारी या संसाधनों को जल्दी से खोजने में सक्षम बनाते हैं।

मेटाडेटा मानक:

डिजिटल पुस्तकालय अक्सर सूचना को प्रभावी ढंग से व्यवस्थित करने और पुनर्प्राप्त करने के लिए मेटाडेटा मानकों (जैसे डबलिन कोर) का उपयोग करते हैं।

पूर्ण-पाठ खोज:

उपयोगकर्ता केवल कीवर्ड ही नहीं, बल्कि दस्तावेज़ों के पूर्ण पाठ में खोज कर सकते हैं।

व्यवस्थित संगठन:

डिजिटल पुस्तकालय आसान नेविगेशन और सूचना पुनर्प्राप्ति की सुविधा के लिए व्यवस्थित संगठन विधियों का उपयोग करते हैं।

सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण:

डिजिटल पुस्तकालय दुर्लभ और नाजुक सामग्रियों को डिजिटलीकृत और संग्रहित करके उनके संरक्षण में योगदान देते हैं।

1-4:2 डिजिटल लाइब्रेरी सिस्टम (DLS) में चुनौतियाँ

डिजिटल संरक्षण:

प्रारूपों और भंडारण माध्यमों के तेजी से अप्रचलित होने के कारण समय के साथ डिजिटल सामग्रियों को संरक्षित करना चुनौतीपूर्ण है।

कॉपीराइट और लाइसेंसिंग मुद्दे:

डिजिटल सामग्रियों के लिए कानूनी पहुँच और उपयोग अधिकार सुनिश्चित करना एक जटिल क्षेत्र है।

पहुँच और समानता:

यह सुनिश्चित करना कि सभी उपयोगकर्ताओं को डिजिटल संसाधनों तक समान पहुँच मिले, विशेष रूप से सीमित इंटरनेट पहुँच वाले क्षेत्रों में, एक सतत चिंता का विषय है।

1-5 अभ्यास प्रश्न

सत्य/असत्य बताइये

1. लाइब्रेरी मैनेजमेंट सॉफ़्टवेयर (LMS) का मुख्य उद्देश्य डिजिटल सामग्री के संरक्षण और संग्रहण को बढ़ावा देना है।

2. डिजिटल लाइब्रेरी सिस्टम (DLS) का एक लाभ यह है कि यह उपयोगकर्ताओं को भौतिक स्थान की आवश्यकता के बिना संसाधनों तक पहुँच प्रदान करता है। ।

3. डिजिटल लाइब्रेरी सिस्टम (DLS) में केवल ई-पुस्तकें और शोध पत्र शामिल होते हैं, और यह अन्य प्रकार की डिजिटल सामग्री को शामिल नहीं करता।

बहुविकल्पीय प्रश्न-

4. लाइब्रेरी मैनेजमेंट सॉफ़्टवेयर (LMS) का उद्देश्य क्या है?

(क) पुस्तकालय संसाधनों का संग्रहण

(ख) पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं के लिए बेहतर खोज कार्यक्षमता प्रदान करना

(ग) लाइब्रेरी की डिजिटल सामग्री का संरक्षण

(घ) लाइब्रेरी संचालन में दक्षता बढ़ाना

5. डिजिटल लाइब्रेरी सिस्टम (DLS) की विशेषता कौन सी है?

(क) भौतिक संसाधनों का संग्रहण और ट्रैकिंगS

(ख) दूरस्थ पहुँच और मल्टीमीडिया सामग्री का समर्थन

(ग) केवल पुस्तकें और जर्नल्स की उपलब्धता

(घ) उपयोगकर्ताओं के लिए मैन्युअल लेन-देन प्रक्रिया

6. लाइब्रेरी मैनेजमेंट सॉफ़्टवेयर (LMS) द्वारा किस कार्य को स्वचालित किया जाता है?

(क) मैन्युअल दस्तावेज़ तैयार करना

(ख) उपयोगकर्ता प्रोफ़ाइल बनाने और ट्रैक करना

(ग) पुस्तकालय सदस्यों के लिए भौतिक संसाधन प्रबंधन

(घ) केवल रिपोर्ट तैयार करना

1-6 सारांश

आज की सूचना-आधारित दुनिया में, लाइब्रेरियों के लिए संसाधन प्रबंधन एक महत्वपूर्ण कार्य बन गया है, और इसके लिए लाइब्रेरी मैनेजमेंट सॉफ़्टवेयर (LMS) और डिजिटल लाइब्रेरी सिस्टम (DLS) का उपयोग बढ़ गया है। ये प्रणालियाँ लाइब्रेरी के संचालन को स्वचालित करती हैं, कार्यों को सरल बनाती हैं, उपयोगकर्ता अनुभव को सुधारती हैं और संसाधन प्रबंधन को अधिक कुशल बनाती हैं।

लाइब्रेरी मैनेजमेंट सॉफ़्टवेयर (LMS) का उद्देश्य पुस्तक/संसाधन प्रबंधन, उपयोगकर्ता प्रबंधन, लेन-देन, रिपोर्टिंग, इन्वेंट्री ट्रैकिंग और एक्सेस कंट्रोल जैसे कार्यों को स्वचालित करना है। यह लाइब्रेरी कर्मचारियों को अधिक दक्षता से काम करने में मदद करता है, और उपयोगकर्ताओं को भी त्वरित पहुंच प्रदान करता है। इसके प्रमुख लाभों में कार्यों की स्वचालन, लागत-कुशलता, और बेहतर संसाधन प्रबंधन शामिल हैं। हालांकि, इसकी चुनौतियों में डेटा सुरक्षा, लागत और कर्मचारियों का प्रशिक्षण शामिल हैं।

डिजिटल लाइब्रेरी सिस्टम (DLS) डिजिटल सामग्री जैसे ई-पुस्तकें, जर्नल, और मल्टीमीडिया सामग्री का प्रबंधन और संग्रहण करता है। DLS उपयोगकर्ताओं को इंटरनेट के माध्यम से संसाधनों तक पहुंच प्रदान करता है और सामग्री के दीर्घकालिक संरक्षण को सुनिश्चित करता है। इसकी विशेषताएँ जैसे कि दूरस्थ पहुँच, उन्नत खोज और पुनर्प्राप्ति, और सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण, इसे अत्यधिक प्रभावी बनाती हैं। हालांकि, इसके सामने भी चुनौतियाँ हैं, जैसे डिजिटल सामग्री का संरक्षण, कॉपीराइट मुद्दे, और समान पहुँच की समस्याएँ।

समग्र रूप से, LMS और DLS दोनों ने लाइब्रेरी प्रबंधन में क्रांति ला दी है और दुनिया भर में सूचना की पहुँच और प्रबंधन को अधिक सुविधाजनक और प्रभावी बना दिया है।

1-7 शब्दावली

कैटलॉगिंग - पुस्तकों, पत्रिकाओं और अन्य संसाधनों की सूची बनाना और उनका व्यवस्थित रिकॉर्ड रखना, जिससे उपयोगकर्ताओं के लिए खोज और एक्सेस सरल हो सके।

उपयोगकर्ता प्रबंधन - लाइब्रेरी सदस्यों की प्रोफ़ाइल बनाना, उनकी सदस्यता की स्थिति, उधार इतिहास और अन्य संबंधित जानकारी का प्रबंधन करना।

चेक-इन/चेक-आउट - उपयोगकर्ताओं को पुस्तकें उधार लेने (चेक-आउट) और वापस करने (चेक-इन) की प्रक्रिया को स्वचालित करना, जिससे लेन-देन की सटीकता और गति में सुधार हो।

आरक्षण और होल्ड प्रबंधन - उपयोगकर्ताओं को चेक-आउट की गई पुस्तकों के लिए आरक्षण करने की सुविधा देना, और जैसे ही पुस्तक उपलब्ध हो, उपयोगकर्ता को सूचित करना।

इन्वेंट्री प्रबंधन - लाइब्रेरी के भंडार में पुस्तकों और अन्य संसाधनों की संख्या, स्थिति और स्थान का ट्रैक रखना, जिससे स्टॉक स्तर और संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित हो।

जुर्माना और शुल्क - अतिदेय रिटर्न या अन्य उल्लंघनों के लिए स्वचालित रूप से जुर्माना और शुल्क की गणना और संग्रहण करना।

मेटाडेटा - डिजिटल संसाधनों के बारे में संरचनात्मक, वर्णनात्मक और प्रशासनिक जानकारी, जैसे लेखक, विषय, प्रकाशन वर्ष आदि, जो खोज और पुनर्प्राप्ति में सहायता करती है।

दूरस्थ पहुँच - इंटरनेट के माध्यम से उपयोगकर्ताओं को डिजिटल संसाधनों तक कहीं से भी पहुँच प्रदान करना, जिससे भौतिक उपस्थिति की आवश्यकता के बिना जानकारी तक पहुंच संभव हो

1-8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. सत्य, **2.** सत्य, **3.** असत्य, **4.** ग, **5.** ख, **6.** ख

1-9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मैकलुप, फ्रिट्ज़ (1983)। सूचना के अध्ययन में अर्थ संबंधी विचित्रताएँ। मैकलुप, एफ. और मैन्सफील्ड, यू. (संपादक), सूचना का अध्ययन, अंतःविषय संदेश। न्यूयॉर्क: मैकमिलन। पृ. 641-71।

2. मार्टिन, विलियम जे. (1988)। सूचना समाज। लंदन: एस्लिब।

3. स्टीवर्ट, थॉमस ए. (1991)। ब्रेन पावर। फॉर्च्यून। 3 जून, 44-60।

4. विकरी, ब्रायन सी. और विकरी, एलिना (1987)। सिद्धांत और व्यवहार में सूचना विज्ञान। लंदन: बटरवर्थ्स।

5. विट्रो, रॉबर्ट ए. (1988)। दृष्टिकोण: ज्ञान आधारित विकास रणनीति की ओर। राष्ट्रीय विकास। 29(8), 4-5।

1-10 निबंधात्मक प्रश्न

1. लाइब्रेरी मैनेजमेंट सॉफ़्टवेयर (LMS) के उद्देश्य और उसकी विशेषताओं पर चर्चा करें। यह कैसे लाइब्रेरी के कार्यों को स्वचालित और सुव्यवस्थित करता है ?

2. डिजिटल लाइब्रेरी सिस्टम (DLS) की विशेषताएँ और उसके उद्देश्य पर विस्तृत रूप से चर्चा करें। यह प्रणाली पारंपरिक लाइब्रेरी प्रबंधन से कैसे आगे बढ़ती है और उपयोगकर्ताओं को क्या लाभ प्रदान करती है ?

3. लाइब्रेरी मैनेजमेंट सॉफ़्टवेयर (LMS) के उपयोग के लाभ और चुनौतियों का विश्लेषण करें। इसके संचालन में दक्षता के अलावा इसके साथ जुड़ी प्रमुख समस्याएँ कौन सी हैं ?

इकाई – 3 पुस्तकालय वेबसाइटों का विकास

इकाई की संरचना

3-1 प्रस्तावना

3-2 उद्देश्य

3-3 पुस्तकालय वेबसाइट

3-3:1 पुस्तकालय वेबसाइट की आवश्यकता

3-4:1 वेबसाइट की अवधारणा

3-4:2 पुस्तकालय वेबसाइट का महत्व

3-5:1 पुस्तकालय की वेबसाइट के प्रभाव

3-5:2 वेबसाइट विकसित करने की प्रक्रिया एवं माध्यम

3-5:2.1 हाइपर टेक्स्ट मार्कअप लैंग्वेज (HTML)

3-5:2.2 कैस्केडिंग स्टाइल शीट्स (CSS)

3-5:2.3 जावा स्क्रिप्ट (JAVA SCRIPT)

3.6 अभ्यास प्रश्न

3.7 सारांश

3.8 शब्दावली

3.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

3.10 निबंधात्मक प्रश्न

3-1 प्रस्तावना

समकालीन संस्था अतीत की शैक्षणिक संस्थाओं से बहुत अलग दिखती है। एक आधुनिक शैक्षणिक सुविधा स्थापित करने के लिए बहुत काम करना होगा, जिसमें एक आदर्श वेबसाइट विकसित करना भी शामिल है। संस्था अपने लक्ष्य को पुस्तकालय वेबसाइट के विकास के साथ पूरा करेगी। यह शैक्षणिक प्रक्रिया को बढ़ाएगा, उपयोगकर्ता के अनुरोधों को पूरा करेगा, और पुस्तकालय सामग्री के उपयोग को बढ़ाएगा। इसलिए अब एक ठोस पुस्तकालय वेबसाइट बनाने के फायदे बहुत लंबे समय तक रहेंगे। एक अच्छी तरह से डिज़ाइन की गई पुस्तकालय वेबसाइट उपयोगकर्ताओं के लिए एक ही विंडो में सेवाओं और सामग्रियों तक पहुँचना आसान बनाती है। वेबसाइट के माध्यम से सेवाएँ और प्रश्न 24/7 भेजे जा सकते हैं। एक सुव्यवस्थित, निर्देशात्मक पुस्तकालय वेबसाइट त्वरित और सरल लाइब्रेरी सेवाएँ प्रदान

करती है। हम बड़ी संख्या में दर्शकों तक तुरंत पहुँचने के लिए वेबसाइट का उपयोग कर सकते हैं। पुस्तकालय तेजी से विकसित हो रहे ज्ञान की मात्रा के साथ बने रहने के लिए वेबपेजों को अनदेखा या उपयोग में नहीं ला सकते। इसलिए, अपनी ऑनलाइन उपस्थिति को बेहतर बनाने और अपनी सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए, प्रत्येक पुस्तकालय को अपने स्वयं के वेब पेज बनाने और डिज़ाइन करने की आवश्यकता होती है।

3-2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पश्चात आप समझ सकेंगे –

- पुस्तकालय के लिए वेबसाइट का विकास और निर्माण।
- एक मंच पर पुस्तकालय सेवाएँ और संसाधन उपलब्ध कराना।
- दी गई जानकारी और लिंक की कार्यक्षमता को नियमित रूप से अपडेट और बनाए रखना।
- वेबसाइट पर उपयोगकर्ताओं के डाउनलोड और सूचना खोज को सुविधाजनक बनाना।
- नवीनतम जानकारी के साथ-साथ कोई भी नई बनाई गई सेवाएँ प्रदान करना, जिन्हें पुस्तकालय समय-समय पर शुरू करेगी।
- यूनिवर्सिटी की मुख्य वेबसाइट को पुस्तकालय के वेबपेजों से जोड़ना।
- पुस्तकालय द्वारा जल्द ही लॉन्च की जाने वाली वेबसाइट के लिए टेम्पलेट के रूप में कार्य करना।

3-3 पुस्तकालय की वेबसाइट

अनुसंधान एवं विकास (आर.एंड.डी.) पुस्तकालयों ने अनुसंधान आउटपुट को सभी उपयोगकर्ताओं के लिए आसानी से सुलभ बनाने की दिशा में अपनी जिम्मेदारी को महसूस किया है। वे अपनी वेबसाइटों का उपयोग एक माध्यम के रूप में कर रहे हैं जिसके माध्यम से वे संभावित उपयोगकर्ताओं तक पहुँच रहे हैं। चूँकि, पुस्तकालय की वेबसाइट उपयोगकर्ताओं के लिए इसका प्रतिबिंब है, इसलिए इसे बाहरी इकाई के बजाय संस्थान के अभिन्न अंग के रूप में देखा जाना चाहिए। इसलिए, पुस्तकालय और उसके कार्यों के सभी पहलुओं को वेबसाइट पर उचित रूप से प्रतिबिंबित किया जाना चाहिए। पुस्तकालय की वेबसाइट कई तरह की भूमिकाएँ निभा सकती है और निभाती भी है। एक पुस्तकालय की वेबसाइट अक्सर उपयोगकर्ताओं और उनकी सेवा करने वाले पुस्तकालयाध्यक्ष दोनों के लिए पुस्तकालय वर्कस्टेशन की भूमिका निभाती है। पुस्तकालय वर्कस्टेशन की भूमिका में, एक पुस्तकालय की वेबसाइट विभिन्न शोध

क्षेत्रों पर डेटाबेस, इलेक्ट्रॉनिक पाठ और पत्रिकाओं के लिए और अक्सर पुस्तकालय कैटलॉग के लिए वितरण तंत्र के रूप में कार्य करती है। इसके अतिरिक्त, एक पुस्तकालय की वेबसाइट भविष्य के शोध के उद्देश्य से अन्य साइटों पर दिखाई देने वाली जानकारी को संग्रहीत करने और बनाए रखने का एक एजेंट बन सकती है। संसाधनों के अतिरिक्त, वेबसाइट उपयोगकर्ताओं को कम समय में इलेक्ट्रॉनिक सेवाएं प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है, क्योंकि अनुसंधान एवं विकास में लगे उपयोगकर्ताओं के पास सेवाओं का उपयोग करने के लिए पुस्तकालय जाने के लिए बहुत कम समय होगा।

3-3:1 पुस्तकालय वेबसाइट की आवश्यकता

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) आज की सूचना दुनिया की महत्वपूर्ण कहावतों में से एक है। आईसीटी सूचना युग और प्रौद्योगिकी का एक उत्पाद है। इसे भविष्य के विकास, अवसरों, चुनौतियों और प्रतिस्पर्धा के लिए एक वाहन के रूप में माना जाता है जो सूचना को एकत्र करने और उपयोग करने में सक्षम बनाता है। आईसीटी कंप्यूटर और संचार प्रौद्योगिकी का एक अभिसरण है, जो प्रसंस्करण, भंडारण और इसकी पुनर्प्राप्ति को बहुत तेज़, त्वरित और प्रभावी बनाता है। दूसरी ओर, यह ध्यान दिया जा सकता है कि वेब तकनीक (www) मानव जाति के सबसे महत्वपूर्ण और जटिल आविष्कारों में से एक है। यह संचार, प्रसार और सूचना की पुनर्प्राप्ति का एक शक्तिशाली साधन है। पुस्तकालयों में आईसीटी और वेब के महत्व पर अब सवाल नहीं उठाया जा सकता है, क्योंकि इसने पुस्तकालयों में कार्यों को करने के तरीके को बदल दिया है। इसके परिणामस्वरूप पुस्तकालय और पुस्तकालयाध्यक्षों की भूमिका में परिवर्तन हुआ है। इसके अलावा, वेब ने पारंपरिक उपयोगकर्ताओं को अधिक तकनीकी रूप से कुशल बना दिया है और वे अपने पुस्तकालयों से पूरी तरह से वेब आधारित सेवाओं की मांग और अपेक्षा कर रहे हैं।

वेब के आगमन के साथ, पुस्तकालयों और अन्य प्रकार के संगठनों में विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक प्रारूपों में सूचना की उपलब्धता और पहुंच को वेब की ग्राफिक और इंटरैक्टिव क्षमताओं के कारण और भी आसान बना दिया गया है। ये क्षमताएँ पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं को डेटाबेस खोजने, चित्रों और तालिकाओं आदि सहित पूर्ण पाठ लेख देखने की अनुमति देती हैं। इसके परिणामस्वरूप सभी प्रकार के संगठनों से एक उपकरण के रूप में वेब की अधिक स्वीकृति हुई है, न केवल सूचना तक पहुँच प्राप्त करने के लिए, बल्कि लक्षित समूहों, सेवाओं के स्तर, संसाधनों आदि की एक विस्तृत श्रृंखला के साथ सूचना प्रसारित करने के साधन के रूप में भी।

पुस्तकालय वेबसाइट एक ऐसा उपकरण है जो पुस्तकालयों को दोनों उद्देश्यों को पूरा करने में मदद करेगा। जैसे-जैसे पुस्तकालय अपनी सेवाओं को वेब पर स्थानांतरित करते हैं, लाइब्रेरी वेबसाइट अपने आप में एक सेवा बन जाती है। यह संग्रह विवरण, दी जाने वाली सेवाओं और लाइब्रेरी की नई पहलों को प्रदर्शित करने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण बन जाता है। इस प्रकार, वेबसाइट विज्ञापन या विपणन का एक साधन बन सकती है। इसके अलावा, पुस्तकालय के उपयोगकर्ताओं को संग्रह और सेवाओं के बारे में आसान तरीके से अवगत कराया जा सकता है, ताकि उन्हें शारीरिक रूप से पुस्तकालय में आने की कम आवश्यकता हो। एक पुस्तकालय वेबसाइट न केवल पुस्तकालय के संग्रह और सेवाओं के बुनियादी विवरण प्रदान करती है, बल्कि लाइब्रेरी की शुरुआत और दृष्टि, काम करने के घंटे, प्रक्रियाएँ, संपर्क विवरण और सभी ई-संसाधनों तक पहुँच के बारे में जानकारी देती है। पुस्तकालय वेबसाइट का होमपेज पुस्तकालय के संसाधनों और सेवाओं के विपणन के लिए एक एकल बिंदु है। संग्रह के अलावा, नई आगमन की सूची का विवरण और ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटलॉग (OPAC), रियली सिंपल सिंडिकेशन (RSS) फ़ीड्स तक पहुँच, ब्लॉग तक पहुँच भी पुस्तकालय वेबसाइट में मूल्य जोड़ सकती है। ओ.पी.ए.सी. तक पहुंच प्रदान करने से उपयोगकर्ताओं को न केवल अपने पुस्तकालय में बल्कि उसी शोध एजेंसी के अन्य पुस्तकालयों में भी किसी विशिष्ट संसाधन की उपलब्धता की खोज करने में मदद मिलेगी। यह यूनियन कैटलॉग के प्रभावी कार्यान्वयन से संभव है। इन सभी के साथ, लाइब्रेरी वेबसाइट स्टाफ सदस्यों के लिए विभिन्न स्तरों के उपयोगकर्ताओं यानी शोधकर्ताओं, संकाय सदस्यों, वैज्ञानिकों, तकनीकी कर्मचारियों और छात्रों की जरूरतों को पूरा करना आसान बनाती है।

पुस्तकालय वेबसाइट को डिजाइन करना एक बार की प्रक्रिया नहीं है, यह गतिशील है और ऐसे कई उदाहरण हैं जहां बेहतर गुणवत्ता के लिए बड़े बदलाव शामिल किए गए हैं। पुस्तकालय की मूल वेबसाइट 1996 में विकसित की गई थी। अध्ययन से पता चलता है कि वर्ष 2000 और 2010 में अकादमिक पुस्तकालय वेबसाइटों की सामग्री में दस वर्षों में बहुत बदलाव आया है, जिसमें ई-संसाधनों और वेब 2.0 अनुप्रयोगों का बढ़ता उपयोग, साथ ही पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं पर ध्यान केंद्रित करना और वेबसाइटों में ग्राफिक्स का बड़ा उपयोग शामिल है। दोनों अध्ययनों से यह तथ्य पता चलता है कि उपयोगकर्ताओं की जरूरतों और उभरते उपकरणों और प्रौद्योगिकी को ध्यान में रखते हुए पुस्तकालय वेबसाइटों के निरंतर मूल्यांकन की हमेशा आवश्यकता होगी। इसलिए, वेबसाइट के डिजाइन के लिए कई प्रमुख डिजाइन तत्वों, दृश्य और सौंदर्य उपस्थिति पर विचार करते हुए सावधानीपूर्वक योजना की आवश्यकता होती है।

3-4:1 वेबसाइट की अवधारणा

यह एक ऐसा युग है, जिसमें सूचना का सृजन बहुत तेजी से हो रहा है और वर्ल्ड वाइड वेब (www) इस सूचना के प्रसार के लिए एक इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के रूप में कार्य करता है। यह माध्यम उपयोगकर्ताओं को समाचार, शोध, स्वास्थ्य सेवा संबंधी जानकारी, अपराध के आँकड़े और मल्टीमीडिया सहित कई तरह की सूचनाओं तक पहुँच प्रदान करता है। वेब समाज के अधिकांश हिस्सों में एक केंद्रीकृत इकाई बन गया है ।

पुस्तकालयों ने अपने संग्रह और सेवाओं तक पहुँच प्रदान करने और उसे बेहतर बनाने के लिए लंबे समय से प्रौद्योगिकी का उपयोग किया है। शुरुआती स्वचालित संचलन प्रणालियों और कैटलॉग से लेकर इंटरनेट आधारित संसाधनों के उदय से लेकर वेब के विस्फोट तक, पुस्तकालयों ने अपने घटकों तक सामग्री के अधिक प्रभावी वितरण के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग किया है। पुस्तकालयों ने सबसे पहले अपने संग्रह की सूची और अपने संगठन के बारे में बुनियादी जानकारी तक पहुँच प्रदान करने के लिए वेब का उपयोग किया। 1990 के दशक के दौरान पुस्तकालयों ने ई-संसाधनों तक पहुँच, विशिष्ट संग्रहों और सेवाओं के बारे में जानकारी सहित अतिरिक्त सामग्री देने के लिए वेब का उपयोग करना शुरू किया ।

पुस्तकालय अक्सर ई-मेल, चैट और त्वरित संदेश प्रणालियों के माध्यम से ई-संदर्भ के रूप में सेवाओं के लिए वेब का उपयोग करते हैं। वेब सभी प्रकार के पुस्तकालयों के अधिकांश प्राथमिक दर्शकों के लिए सूचना का सर्वव्यापी स्रोत बन गया है। एक वेबसाइट, जैसा कि आम तौर पर परिभाषित किया जाता है, सूचना के संबंधित वेब पेजों का एक समूह है जो इंटरनेट पर इलेक्ट्रॉनिक रूप से एक साथ सार्थक रूप से जुड़े हुए हैं। अंगूठे का सामान्य नियम यह है कि वेब पर सभी इलेक्ट्रॉनिक दस्तावेज़ों पर विचार किया जाए, जिनके पते एक अद्वितीय होस्टनाम से शुरू होते हैं, जो एक वेबसाइट से संबंधित हैं। किसी वेबसाइट का पता लगाने और उस तक पहुँचने के लिए, किसी को ब्राउज़र द्वारा प्रदान की गई उपयुक्त जगह में उसका फ़ाइल पता या यूनिफ़ॉर्म रिसोर्स लोकेटर (URL) दर्ज करना होगा। इंटरनेट पर किसी ऑब्जेक्ट को निर्दिष्ट करने के लिए URL मानक है। मान लीजिए कि कोई किसी दिए गए वेब ब्राउज़र में http://www.guglibrary.net/facilities.htm जैसा काल्पनिक URL दर्ज करता है, चाहे वह दुनिया में कहीं भी हो या वह वेबसाइट जहाँ भी होस्ट की गई हो, स्क्रीन पर वही पेज पॉप अप होना चाहिए ।

3-4:2 पुस्तकालय वेबसाइट का महत्व

पुस्तकालय वेबसाइट उपयोगकर्ता अनुभव में एक महत्वपूर्ण घटक का प्रतिनिधित्व करती है, क्योंकि लाइब्रेरी बुकमार्क और ब्रोशर के उपयोग में गिरावट देखी गई है। पुस्तकालय

वेबसाइट पुस्तकालय के "चेहरे" का प्रतिनिधित्व करती है और इसके प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों को प्रदर्शित करती है और उपयोगकर्ताओं को सेवाओं को बढ़ावा देती है, जैसे कि संचलन, भंडार, संदर्भ, लाइब्रेरी निर्देश, पुस्तकालय कार्यक्रम, अंतर-पुस्तकालय ऋण, ई-संसाधनों तक पहुंच और विषय गेटवे। पुस्तकालय वेबसाइट पुस्तकालय के समय-सारणी, नीति संबंधी जानकारी, दिशा-निर्देश, स्टाफ निर्देशिका और बुनियादी संपर्क जानकारी जैसी जानकारी प्रदर्शित करती है। पुस्तकालय वेबसाइट एक जीवंत दस्तावेज़ है, ब्रोशर, पोस्टर या फ़्लायर के विपरीत। पुस्तकालय वेबसाइट एक आभासी स्थान का भी प्रतिनिधित्व करती है जहाँ जानकारी एकत्र, व्यवस्थित और प्रस्तुत की जाती है। इस आभासी स्थान को विकसित करते समय, उपयोगकर्ता की ज़रूरतों को ठीक से प्रतिबिंबित करना महत्वपूर्ण है। वेबसाइट को इस तरह से विकसित किया जाना चाहिए कि उपयोगकर्ता आसानी से आवश्यक जानकारी का पता लगा सकें।

पुस्तकालय वेबसाइट का मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है जो पुस्तकालय स्टाफ को वेबसाइट की गुणवत्ता पर नियंत्रण रखने और इसे हमेशा उपयोगकर्ता की ज़रूरतों के हिसाब से प्रासंगिक बनाने में मदद करती है। बदलती अपेक्षाओं के साथ, वेबसाइट को उपयोगकर्ता केंद्रित, वर्तमान, प्रासंगिक, सुव्यवस्थित बनाने के लिए सामग्री और डिज़ाइन सुविधाओं को संशोधित किया जाना चाहिए और इसमें ऐसी भाषा होनी चाहिए जिसे उपयोगकर्ता समझ सके। पुस्तकालय वेबसाइट को न केवल जानकारी प्रदान करनी चाहिए, बल्कि एक शिक्षण उपकरण भी होना चाहिए। नियमित अंतराल पर मूल्यांकन वेबसाइट को अद्यतित रखता है और इसे उपयोगकर्ता के लिए अधिक उपयोगी बनाता है।

3-5:1 पुस्तकालय की वेबसाइट के प्रभाव

पुस्तकालय की वेबसाइट का प्रभाव बहुत महत्वपूर्ण है, खासकर शिक्षा, सूचना और समृद्धि के संदर्भ में। यहाँ कुछ प्रमुख प्रभाव दिए गए हैं।

1. पुस्तकालयों की वेबसाइट पाठकों को पुस्तकें, लेख, शोध पत्र, और अन्य संसाधनों तक त्वरित पहुँच प्रदान करती हैं। इससे छात्रों, शोधकर्ताओं, और सामान्य पाठकों को किसी भी समय और कहीं से भी आवश्यक सामग्री मिल सकती है।
2. आजकल, बहुत सी पुस्तकालय डिजिटल संसाधन जैसे ई-बुक्स, ई-जर्नल्स, और ऑनलाइन डेटाबेस प्रदान करती हैं। ये वेबसाइटें इन संसाधनों तक पहुँच आसान बनाती हैं, जिससे पाठक घर बैठे ही इनका उपयोग कर सकते हैं।

3. पुस्तकालय की वेबसाइट छात्रों और शिक्षकों के लिए सहायक उपकरण प्रदान करती हैं, जैसे कि ऑनलाइन अध्ययन सामग्री, ट्यूटोरियल, और प्रोजेक्ट सहायक सामग्री। ये वेबसाइटें शिक्षा के स्तर को ऊंचा उठाने में मदद करती हैं।
4. पुस्तकालयों की वेबसाइट समाज को पुस्तकों और साहित्य के महत्व से अवगत कराती हैं, जिससे पाठकों के बीच साहित्यिक जागरूकता और संस्कृति का विकास होता है।
5. पुस्तकालय की वेबसाइट में उपयोगकर्ताओं को किताबों, लेखों, और अन्य शोध सामग्रियों की खोज करने के लिए उन्नत सर्च इंजन और श्रेणीबद्ध सामग्री मिलती है। यह शोध कार्य को बहुत आसान और तेज़ बनाता है।
6. पुस्तकालय की वेबसाइट नियमित रूप से नवीनतम पुस्तकों, शोध कार्यों, और कार्यक्रमों के बारे में जानकारी अपडेट करती हैं। इससे पाठकों को किसी नई जानकारी के लिए बार-बार पुस्तकालय जाने की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि वे वेबसाइट के माध्यम से ही अपडेट रह सकते हैं।
7. पुस्तकालय की वेबसाइट विकलांग उपयोगकर्ताओं, बुजुर्गों, और अन्य विशेष आवश्यकताओं वाले व्यक्तियों के लिए उपयुक्त होती हैं, क्योंकि इन वेबसाइटों में समावेशी डिज़ाइन और सहायक उपकरण होते हैं, जो इन उपयोगकर्ताओं के लिए इंटरनेट का उपयोग करना आसान बनाते हैं।

3-5:2 वेबसाइट विकसित करने की प्रक्रिया एवं माध्यम

1991 में पहली वेबसाइट लॉन्च होने के बाद से, वेबसाइट डिज़ाइन और विकास के क्षेत्र में तेज़ी से विकास हुआ है। यहाँ हम इस अध्ययन के उद्देश्यों के लिए वेबपेजों के डिज़ाइन के लिए निम्नलिखित कार्यप्रणाली को कवर करते हैं।

वेबसाइट विकसित करने की प्रक्रिया

चरण 1: सूचना एकत्र करना

हम वेबसाइट बनाने से पहले डेटा एकत्र करते हैं। इसमें लक्षित दर्शक, प्राथमिक लक्ष्य और संस्थागत उद्देश्य शामिल होंगे। यह वेबसाइट मूल रूप से हमारे उद्देश्य को ध्यान में रखकर बनाई गई थी। क्योंकि यह स्व-प्रचार और अंतिम उपयोगकर्ताओं को जब भी और जहाँ भी हो, पुस्तकालय सेवाएँ प्रदान करने के लिए है।

चरण 2: योजना

हम अपनी वेबसाइट की योजना बनाते हैं जैसे ही हम आवश्यक डेटा प्राप्त कर लेते हैं। हम पहले चरण के डेटा का उपयोग करके साइटमैप बनाते हैं। हमारी वेबसाइट पर सभी विषयों और उप-विषयों की सूची को साइटमैप कहा जाता है। हम साइटमैप की सहायता से वेबसाइट को देख पाएंगे और उपयोगकर्ता पृष्ठों के बीच कैसे नेविगेट करता है। यह उपयोगकर्ता के अनुकूल, दिखने में आकर्षक वेबसाइट बनाने में एक महत्वपूर्ण कदम है।

चरण 3: डिज़ाइन

वेबसाइट की संरचना की योजना बनाने के बाद, हम इसका डिज़ाइन शुरू करते हैं। सभी दृश्य सामग्री, जिसमें चित्र और वीडियो शामिल हैं, इस श्रेणी में आएंगे।

चरण 4: सामग्री

वेबसाइट के सबसे महत्वपूर्ण घटकों में से एक वह सामग्री है जो हमारे पास है। हमारी सामग्री उपयोगकर्ताओं को बताएगी कि हम क्या कर रहे हैं और उन्हें हमारी वेबसाइट पर आने के लिए प्रेरित करेगी। हालाँकि, हमें वेब सामग्री लिखने से पहले अपने उद्देश्यों और प्रयोजनों को निर्धारित करना चाहिए। उपयोगकर्ताओं के वापस आने के लिए, हमारी सामग्री आकर्षक और प्रासंगिक दोनों होनी चाहिए।

चरण 5: कार्यक्षमता

हम वास्तव में इस बिंदु पर अपनी वेबसाइट बनाना शुरू कर रहे हैं। यह वह बिंदु भी है जहाँ पिछले सभी चरणों को मिलाकर वेबसाइट की कार्यक्षमता और उपस्थिति बनाई जाएगी। हमारा लक्ष्य अपनी वेबसाइट को उपयोग और नेविगेट करने में आसान बनाना है। आम तौर पर, सभी उप-पृष्ठों का निर्माण होमपेज के बाद होता है। इसके अतिरिक्त, हमें यह गारंटी देनी चाहिए कि वेबसाइट किसी भी डिवाइस में देखी जा सके।

चरण 6: परीक्षण

सफलतापूर्वक विकसित होने के बाद भी, वेबसाइट अभी लॉन्च के लिए तैयार नहीं है। इसे पहले परीक्षण के लिए रखा जाना चाहिए। वेबसाइट का परीक्षण समय लेने वाला हो सकता है, यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि यह सही ढंग से काम करे। यहाँ हम यह सत्यापित करेंगे कि

वेबसाइट कंप्यूटर पर दिखाई देती है, सभी बटन और लिंक का परीक्षण करेंगे, और सभी वर्तनी की जाँच करेंगे।

चरण 7: लॉन्च

अब रोमांचक भाग के लिए, वास्तव में वेबसाइट लॉन्च करना। हमने इसे कई बार परीक्षण किया है और अपने डेस्कटॉप के साथ-साथ LAN वातावरण पर भी इसकी गहन जाँच की है।

चरण 8: निगरानी और अपडेट

हमारी वेबसाइट सफलतापूर्वक लॉन्च होने के बाद भी, समय-समय पर इसकी जाँच करना महत्वपूर्ण है। त्रुटियाँ हो सकती हैं, इसलिए यह सुनिश्चित करने के लिए वेबसाइट को बनाए रखना महत्वपूर्ण है कि यह अच्छी स्थिति में रहे। हमारा लक्ष्य किसी भी समस्या का तुरंत समाधान करना और हमारी वेबसाइट का सबसे हालिया संस्करण बनाए रखना है।

चरण 9: ट्रैकिंग और मूल्यांकन

हमारे पास अपने वेब पेजों की उपस्थिति पर बहुत अधिक नियंत्रण होगा और उनकी उपस्थिति में सुधार करना आसान होगा। क्योंकि HTML प्लेटफ़ॉर्म स्वतंत्र भाषा है और इसे किसी भी तरह के कंप्यूटर पर लिखा जा सकता है। इसे Windows, Macintosh, Linux और UNIX सहित किसी भी तरह के ऑपरेटिंग सिस्टम पर देखा जा सकता है।

वेबसाइट विकसित करने के माध्यम

1. HTML
2. कैस्केडिंग स्टाइल शीट (CSS)
3. जावा स्क्रिप्ट (JAVA Script)

3-5:2.1 हाइपर टेक्स्ट मार्कअप लैंग्वेज (HTML)

HTML एक मानक टेक्स्ट आधारित कंप्यूटर भाषा है जिसका उपयोग इंटरनेट या ऑफ़लाइन उपयोग पर विकासशील वेबसाइट के लिए इलेक्ट्रॉनिक (हाइपरटेक्स्ट) दस्तावेज़ बनाने के लिए किया जाता है।

HTML वेब पेज विकसित करने के लिए एक भाषा है। HTML का मतलब हाइपर टेक्स्ट मार्कअप लैंग्वेज है। यह प्रोग्रामिंग भाषा नहीं है, यह एक मार्कअप भाषा है। मार्कअप भाषा मार्कअप टैग का एक संग्रह है। HTML वेब पेजों का वर्णन करने के लिए मार्कअप टैग का उपयोग करता है। HTML मार्कअप टैग को आमतौर पर HTML टैग या सिर्फ टैग कहा जाता है। HTML टैग <html> जैसे कोण कोष्ठकों से घिरे कीवर्ड हैं। HTML टैग आमतौर पर जोड़े में आते हैं, जैसे और । एक जोड़ी में पहला टैग स्टार्ट टैग है; दूसरा टैग एंड टैग है। स्टार्ट और एंड टैग को ओपनिंग टैग क्लोजिंग टैग भी कहा जाता है।

3-5:2.1 कैस्केडिंग स्टाइल शीट (CSS)

CSS का मतलब है कैस्केडिंग स्टाइल शीट्स। यह एक सरल डिज़ाइन भाषा है जिसका उद्देश्य वेब पेजों को प्रस्तुत करने योग्य बनाने की प्रक्रिया को सरल बनाना है। CSS वेब पेज के लुक और फील वाले हिस्से को संभालता है। CSS का उपयोग करके, आप टेक्स्ट का रंग, फ़ॉन्ट की शैली, पैराग्राफ़ के बीच की दूरी, कॉलम का आकार और लेआउट कैसे किया जाता है, कौन सी पृष्ठभूमि छवियाँ या रंग इस्तेमाल किए जाते हैं, साथ ही कई अन्य प्रभाव नियंत्रित कर सकते हैं। CSS HTML और अन्य मार्कअप भाषाओं (जैसे XHTML और XML) के साथ काम करता है ताकि सामग्री को प्रस्तुत करने के तरीके को नियंत्रित किया जा सके। कैस्केडिंग स्टाइल शीट्स वेबपेज की सामग्री से वेबपेज की उपस्थिति को अलग करने का एक साधन है।

कैस्केडिंग स्टाइल शीट्स (CSS) एक सरल तंत्र है जिसका उपयोग वेब पेजों के लेआउट को फ़ॉर्मेट करने और वेब दस्तावेज़ों में स्टाइल (जैसे, फ़ॉन्ट, रंग, स्पेसिंग ...) जोड़ने के लिए किया जाता है जिन्हें पहले केवल पेज के HTML में परिभाषित किया जा सकता था। CSS बताता है कि HTML तत्वों को स्क्रीन, पेपर या अन्य मीडिया में कैसे प्रदर्शित किया जाना है। यह एक साथ कई वेब पेजों के लेआउट को नियंत्रित कर सकता है।

3-5:2.1 जावा स्क्रिप्ट (JAVA Script)

जावा स्क्रिप्ट एक गतिशील (Dynamic) स्क्रिप्टिंग कंप्यूटर प्रोग्रामिंग भाषा है जिसका उपयोग HTML पेजों में वेब पेजों को इंटरैक्टिव बनाने के लिए किया जाता है। जावा स्क्रिप्ट का सबसे ज़्यादा इस्तेमाल क्लाइंट साइड स्क्रिप्टिंग भाषा के रूप में किया जाता है। इसका मतलब है कि जावास्क्रिप्ट कोड को HTML पेज में लिखा जाता है। जब कोई उपयोगकर्ता जावा स्क्रिप्ट के साथ HTML पेज का अनुरोध करता है, तो स्क्रिप्ट ब्राउज़र को भेजी जाती है और ब्राउज़र को

इसके साथ कुछ करना होता है। जावा स्क्रिप्ट का जावा से कोई लेना-देना नहीं है। जावास्क्रिप्ट और जावा अवधारणा और डिज़ाइन दोनों में पूरी तरह से अलग भाषाएँ हैं। जावा स्क्रिप्ट प्रोग्राम उपयोगकर्ता के वेब ब्राउज़र (सर्वर पर नहीं) में निर्मित एक इंटरप्रेटर द्वारा चलाए जाते हैं। यह हल्की व्याख्या की गई प्रोग्रामिंग भाषा है और आमतौर पर वेब पेजों के एक हिस्से के रूप में उपयोग की जाती है, जिसके कार्यान्वयन से क्लाइंट-साइड स्क्रिप्ट उपयोगकर्ता के साथ बातचीत कर सकती है और गतिशील पेज बना सकती है। जावा की तुलना में जावा स्क्रिप्ट एक बहुत ही स्वतंत्र भाषा है।

3-5:2.3 पुस्तकालय वेबसाइट की वास्तुकला और डिजाइन

पुस्तकालय वेबसाइट की वास्तुकला और डिजाइन: इसमें निम्नलिखित तरीके से प्रोग्रामिंग की योजना और निष्पादन शामिल है।

एक उपयोगकर्ता पुस्तकालय वेबसाइट में ये पृष्ठ पा सकता है :

1. होम (Home)
2. हमारे बारे में (About Us)
3. सुविधाएँ (Facilities)
4. अनुभाग (Sections)
5. संसाधन (Resources)
6. गैलरी (Gallery)
7. संपर्क (Contact)
8. ओपैक (OPAC)
9. पुस्तकालय सदस्यता (Library Membership)
10. प्रतिक्रिया (Feedback)

3-6 अभ्यास प्रश्न

सत्य/असत्य बताइये

1. पुस्तकालय की मूल वेबसाइट 1996 में विकसित की गई थी।

2. जावा स्क्रिप्ट एक गतिशील (Dynamic) स्क्रिप्टिंग कंप्यूटर प्रोग्रामिंग भाषा है।
3. HTML एक प्रोग्रामिंग भाषा है।

3-7 सारांश

वेबसाइट पुस्तकालय तक पहुँच प्रदान करती है। वेबसाइट को पुस्तकालय में लागू किया जा सकता है। वेबसाइट शैक्षणिक संसाधनों और अन्य प्रासंगिक सूचनाओं को व्यवस्थित करने में मदद करती है और अंततः छात्रों और संकायों के बीच संस्थान की लोकप्रियता बढ़ाती है। पुस्तकालय की वेबसाइट उपयोगकर्ता के अनुकूल और सरल प्रकृति की होनी चाहिए। यह पुस्तकालय की गतिविधियों और नई सेवाओं के बारे में जानकारी रखने के लिए एक उपयोगी उपकरण है। वेबसाइट किसी भी शैक्षणिक संस्थान के सूचना चाहने वालों और सूचना स्रोतों के बीच एक पुल का काम करेगी। पुस्तकालय वेबसाइट अपने उपयोगकर्ताओं को किसी भी समय, (24/7) कम से कम लागत और कम जनशक्ति के साथ सेवाएँ और संसाधन प्रदान कर सकती है। पुस्तकालय की वेबसाइट, पुस्तकालय के "चेहरे" का प्रतिनिधित्व करती है और इसके प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों को प्रदर्शित करती है और उपयोगकर्ताओं को सेवाओं को बढ़ावा देती है, जैसे कि संचलन, भंडार, संदर्भ, पुस्तकालय निर्देश, पुस्तकालय कार्यक्रम, और अंतर-पुस्तकालय ऋण, ई-संसाधनों और विषय गेटवे तक पहुंच। पुस्तकालय वेबसाइट, पुस्तकालय के घंटे, नीति संबंधी जानकारी, दिशा-निर्देश, स्टाफ निर्देशिका और बुनियादी संपर्क जानकारी जैसी जानकारी प्रदर्शित करती है।

3-8 शब्दावली (Glossary)

HTML- Hyper Text Markup Language

CSS- Cascading Style Sheets

Java Script- एक गतिशील (Dynamic) स्क्रिप्टिंग कंप्यूटर प्रोग्रामिंग भाषा है।

ओपैक (OPAC)- Online Public Access Catalogue।

कार्यक्षमता- किसी काम को प्रभावी ढंग से करने या किसी समय में तय मात्रा में काम करने की क्षमता।

परीक्षण- किसी चीज़ की जाँच, परखना या आज़माना, ताकि उसकी गुणवत्ता, कार्यक्षमता या विश्वसनीयता का पता लगाया जा सके।

निगरानी और अपडेट- निगरानी का मतलब है जानकारी इकट्ठा करना, उसका विश्लेषण करना और उसका उपयोग करना और अपडेट का मतलब है कि किसी भी जानकारी या स्थिति में नवीनतम या ताज़ा जानकारी प्रदान करना।

Linux- एक ओपन-सोर्स ऑपरेटिंग सिस्टम (ओएस) जिसका उपयोग कंप्यूटर, स्मार्टफोन और सुपर कंप्यूटर सहित कई उपकरणों में किया जाता है।

प्रतिक्रिया- प्रतिक्रिया का मतलब है, किसी चीज़ के जवाब में की गई कार्रवाई या प्रतिकार।

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. सत्य, 2. सत्य, 3. असत्य

3-9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भट्टाचार्जी, जयंत, सिन्हा, मनोज कुमार, और मनोज कुमार के. (2006)। वेबसाइटों के डिजाइन, विकास और रखरखाव के लिए गुणवत्ता नियंत्रण मुद्दे: गतिशील अंतर-संचालन योग्य वेब आधारित सूचना प्रणालियों में। 4वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन CALIBER, गुलबर्गा, कर्नाटक की कार्यवाही, 13-22.

2. मंजरी, एल., और त्रिनिदाद-क्रिस्टेंसन, जे. (2006). पुस्तकालय और सूचना विज्ञान के छात्रों के लिए एक वेबसाइट का उपयोगकर्ता-केंद्रित डिजाइन: अनुमानी मूल्यांकन और प्रयोज्यता परीक्षण. सूचना प्रौद्योगिकी और पुस्तकालय, 25(3), 163-169.

3. हाउस, जे. (2007). क्रोध के अंगूर बहाल: छात्र सीखने का आकलन करने के लिए वेबसाइट बनाना. अंग्रेजी जर्नल, 97(2), 79-83.

4. कार्ला, जया, और वर्मा, आर. के. (2011). भारत में चयनित शोध संस्थानों की लाइब्रेरी वेबसाइटों के मूल्यांकन संकेतक। लाइब्रेरी और सूचना अध्ययन के इतिहास, 58 (3), 139-150.

5. लैंकेस्टर, एफ. डब्ल्यू. (1985). पेपरलेस समाज पर फिर से विचार. अमेरिकी पुस्तकालय. 16(1).

6. आइवरी, एम. वाई. (2013). स्वचालित वेब साइट मूल्यांकन: शोधकर्ताओं और चिकित्सकों के दृष्टिकोण. न्यूयॉर्क: स्प्रिंगर.

7. जयशंकर, आर., सुजीता, एम., और वलारमथी, ए. (2012). आईसीएमआर संस्थानों की वेबसाइटों के वेबपेज: एक वेबमेट्रिक विश्लेषण. लाइब्रेरी, सूचना और अभिलेखीय अध्ययन के वैश्विक उन्नत अनुसंधान जर्नल. 1(1), 006-018.

3-10 निबंधात्मक प्रश्न

1. पुस्तकालय वेबसाइट के भूमिका और महत्व का विस्तार से वर्णन कीजिये?
2. HTML, CSS और जावा स्क्रिप्ट का उपयोग करके पुस्तकालय वेबसाइट विकसित करने के चरणों पर चर्चा करें।